कहानी

ओपन मैरिज

गीता शर्मा

वे लोग ओपन मैरिज में हैं. जानते हैं न आप ओपन मैरिज, माने आजाद पंछी की तरह कहीं भी उड़ो अपनी मर्जी से किसी भी डाल पर उतर जाओ और फिर वापिस अपने घोंसले में आ जाओ... घोंसला जिसे वो लोग शादी मानते हैं.

अरहान और परिणीति के बीच अलिखित समझौता था कि कहीं भी उड़ो पर लौट कर घर ही आना है...

'जैसे उड़ी जहाज का पंछी उड़ी जहाज पर आवे ', अरहान ने हंसते हुए कहा 'आखिरकार पवित्र अग्नि के सामने फेरे लिए हैं हमने,' वह बोली, 'वैसे भी सब लोग हमें आइडियल कपल कहते हैं.' आज के समय में 'मैरिज इज नॉट ए कनफाइनमेंट...आजीवन कैद...' वे कहते हुए ठहाका लगाते.

अरहान मर्चेंट नेवी में है. एक बार शिप पर जाता है तो छै सात महीने बाद ही लौटता है .उसके पीछे परिणीति पार्टी परिंदा बन अपनी जिंदगी खुलकर जीती है. अरहान को शिप पर गए कई महीने हो गए हैं लेकिन परिणीति ने उसकी कोई खास कमी महसूस नहीं की . करती भी क्यों? जब कई विकल्प खुले हों ...और हो भी क्यों ना ? वो है ही इतनी स्मार्ट और फिट...उसका फिगर किसी नवयुवती की सी लचक और कामुकता से भरा हुआ है. जो देखता बस देखता रह जाता. वो भी अपनी सुन्दरता शीशे से ज्यादा मर्दों की आंखों में देखती. अपने पीछे पागल होते मर्दों की आंखों से टपकती लार देखने का नशा सा हो चला है उसे.

अरहान को शिप पर गए कई महीने हो गए हैं और परिणीति को उसके आने का कोई इंतजार नहीं है .वह अपनी दुनिया में मगन है क्योंकि इस बार मामला थोड़ा अलग है. कोई देह को पार करके दिल पे दस्तक दे रहा है .... वह दिल दे बैठी है इंद्रेश को...शहर का नामी गिरामी बिजनेस मैन उसके प्यार में पागल जो हो गया है. इन दिनों रोमांस हवाओं में घुल रहा है. दोनों की शामें सिंदूरी हो चली हैं.

एक दिन परिणीति ने इंद्रेश के पर्स से उसकी पत्नी का गिरा फोटो उठाकर देखा तो देखती रह गई. वह ऊपर से लेकर नीचे तक गहनों में जड़ी देवी प्रतिमा का पोस्टर लग रही थी. उसकी नज़र उसके मंगलसूत्र पर अटक कर रह गई, जिसके बीचोबीच एक बड़ा सा हीरा दमक रहा था.

'मैं कल शहर से बाहर जा रहा हूं.'

पत्नी के गले में अपनी बाहें डालते हुए इंद्रेश ने बताया और फिर गले में पड़े मंगलसूत्र को देखकर कहा,' इसे तो उतार दिया करो क्यों डाले रहती हो हर वक्त ...'

'हम्मम ',मंगलसूत्र उतारकर एक ओर रखते हुए पद्मा ने कहा . इससे ज्यादा वह कुछ बोल ही नहीं पाई .अंतरंग क्षणों ने उसके अधरों पर मौन जड़ दिया था. एक लंबे अंतराल के बाद मिले इस अहसास को वह जी लेना चाहती है. खुशनुमा रंग में रंगी सुबह रात की खुमारी में चहक रही है.

महीनों बाद अरहान घर लौटा तो परिणीति के चेहरे की चमक उसकी खुशी बयां कर रही थी.

'अरे वाह ! बहुत खुश लग रही हो आजकल और फिर उसके गले में पड़े मंगल सूत्र को देख कर बोला, 'बहुत सुंदर लग रहा है ये !'

मंगलसूत्र को अपने हाथ में झुलाते हुए अरहान बोला, 'बहुत कीमती लग रहा है.'

'हम्मम'

'पर ये तुम्हारा तो नहीं है ? और तुम्हारा मंगल सूत्र कहां है?'

'वो टूट गया था... पुराना भी हो गया था तो बदल लिया...' ' टूट गया कैसे....? बदल लिया क्यों?'

'पता नहीं... अरे...तुम इतने दकियानूसी कब से हो गए? सुनो अभी मुझे कहीं जाना है...बाद में बात करते हैं,' कहते हुए निकल गई. अरहान को परिणीति का रवैया बुरा भी लगा और अजीब भी...जब से वह लौटा है वह नोटिस कर रहा है कि इन दिनों वह बदली बदली सी है. जैसे उसका आना उसे अच्छा नहीं लग रहा बल्कि अखर रहा है. उसका खिला हुआ चेहरा महीनों बाद घर लौटे पति के कारण नहीं है फिर क्या बात होगी? कहीं वह सीमा तो नहीं लांघ रही है,

पर कोई सीमा तो निर्धारित ही नहीं है, क्या वह इस घोंसले से उड़ चुकी है?'

फोन की घंटी बजने से उसकी तंद्रा भंग हुई .दूसरी ओर एक महिला थी, जिसने बिना किसी भूमिका के प्रश्न दाग दिया,

'आपको पता है कि आपकी बीबी आपके पीछे क्या करती है?

'क्या मतलब ?'

'वो मेरे पति पर डोरे डाल रही है उसे रोकिए...'

'देखिए मैं उसे नहीं कुछ कह पाऊंगा...आप अपने पति को कहिए.' 'मर्द कभी मानते हैं उन्हें क्या ...पर औरत को तो अपने सम्मान की रक्षा करनी चाहिए न...

मर्द से बराबरी करने का भला ये भी कोई तरीका हुआ. ये कैसी आधुनिकता है जिसमें सारी हदें लांघ ली जाएं? क्या यही है स्त्री स्वातंर्त्य? ' फिर संयत होकर बोली , 'आप पति हैं आप रोक लगाइए, इतना अधिकार तो रखते हैं न आप अपनी पत्नी पर ,उन्हें समझाइए नहीं तो दो घर टूट जायेंगे...'

'कोई घर नहीं टूटेगा आप निश्चिंत रहें...पर मैं उसे रोक नहीं क्योंकि मैं भी...'

'मतलब ?' क्या हम मिल सकते हैं?' अरहान ने पूछा

'हम्मम...आज ही मिलते हैं...मैं समय और स्थान आपको मैसेज कर दूंगी.'

' देखिए पद्मा जी... मैं महीनों अपनी पत्नी से दूर रहता हूं...जो काम मुझे अपने लिए गलत नहीं लगता उसके लिए कैसे गलत हो सकता है ? तो आप मुझे माफ करें और अपने पति को रोकें यदि रोक सकें.'

'अरे उन्हें तो यह पता भी नहीं है कि मुझे सब पता है...लेकिन शायद आपको भी नहीं पता कि पानी सिर से ऊपर आ चुका है.' पद्मा ने सिलसिलेवार तरीके से सारी बात अरहान को बता दी. 'विवाह बंधन न सही पर एक संस्कार तो है न...अगर कोई इसकी पवित्रता भंग करे तो क्या यह संबंध बचेगा,परिवार और समाज बचेगा ? इस अराजकता को आप लोग आधुनिकता का नाम कैसे दे सकते हैं ? इस विकृति का असर सिर्फ आप दोनों तक ही सीमित नहीं है बल्कि समाज को भी दूषित कर रहा है. आप विचार कीजिए कि क्या आप लोग जो कर रहे हैं वह ठीक है? हम अपने बच्चों के लिए कैसा समाज बना रहे हैं? स्वतंत्रता या कहें स्वच्छंदता की भी कोई सीमा कोई नियम कोई मर्यादा तो होनी ही चाहिए. हम आदिम काल में नहीं है सभ्य समाज में रहते हैं, और आप जिसे स्वतंत्रता और आधुनिकता मानते हैं दरअसल वह पाशविक वृत्ति है,' कहते हुए उसका मुंह तमतमा उठा. 'यदि आप कोई कदम नहीं उठाएंगे तो मुझे ही कुछ करना पड़ेगा.' कहते हुए वहां से निकल गई.

'कहां से आ रही हो तुम ? पद्मा को देख इंद्रेश ने प्रश्न किया

'पुलिस स्टेशन ?'

'क्या...पर क्यों ?'

'मेरे गहने चोरी कर लिए थे किसी ने...'

'अरे...इतना सब कुछ हो गया तुमने मुझे बताया तक नहीं?

'क्या करती बता के आपको तो पता ही था...'

'मतलब?'

'मतलब ये कि आजकल की औरतें भी अपने शौक पूरा करने के लिए किसी भी हद तक चली जाती हैं ...अगर आपको बताती तो आप नाराज़ ही होते कि इतनी कीमती चीज़ मैंने खुले में छोड़ी ही क्यों?'

'तुम हो ही इतनी लापरवाह...अब भुगतो अपनी लापरवाही की सज़ा ' 'लापरवाही नहीं अटूट विश्वास...अब कोई अमानत में ख़यानत करे तो क्या कीजियेगा? जानते हैं ना आप कितना पुराना रिश्ता था. मैं आंख बंद करके विश्वास करती थी...पर मेरी ज़रा सी लापरवाही ने नीयत बिगाड़ दी उसकी...पता नहीं क्या क्या चुराती रही होगी....मैं तो उसके पति को बहुत बुरा समझती थी कि उसका ठीक से ध्यान नहीं रखता... अपनी जिम्मेदारी ठीक से नहीं निभाता... तभी तो बेचारी को ये सब करना पड़ता है. पर ये तो अच्छा रहा कि उसके पति की निशानदेही पर पुलिस ने उससे गहने जब्त कर लिए...अब जेल की हथकड़ियां पहनेगी.

'धोखा दे रही थी... तो अब सजा भुगतेगी, ' इंद्रेश ने ताव में आकर कहा 'और नहीं तो क्या ...कुछ और चुराती तो माफ़ कर देती लेकिन उसने मेरे सुहाग पर हाथ डाला था तो कैसे माफ़ करती? ' 'अच्छा किया अब तो घर से निकाल दिया न उस कामवाली को' 'हां... आपको तो निकाल नहीं सकती थी न...'

मुट्ठी में बंद मंगलसूत्र को अपने गले में डालते हुए पद्मा ने इंद्रेश की चौंधियाई चोर निगाहों में झांकते हुए कहा.

क्लास by बड़े भाई

नए साल में छोड़िए यह तीन आदतें

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

छोटे भाई, यह साल बीतने में बस कुछ दिन शेष हैं. नया साल आने की तैयारी कर चुका है. यह साल जैसा भी रहा, अच्छा रहा. हमने आपने अच्छे बुरे अनुभव भी किए. सब किसी न किसी तरह हमारे भविष्य के लिए अनुभव बने. छोटे भाई, आज का यह लेख आपकी नए साल की तैयारी के लिए है. छोटे भाई, कोई भी साल हमारी उम्र का एक हिस्सा भी अपने साथ ले जाता है. इसलिए आवश्यक है कि हम अपने समय को सही जगह खर्च करें. जिससे हम उन्नति करें. कुछ नया, कुछ बेहतर रचें. तो छोटे भाई इसके लिए हमें कुछ छोड़ना होगा. और आज मैं वो तीन आदतें हैं जो आप यदि छोड़ दें तो इससे बचा समय समय हमें कुछ बड़ा दे सकता है और उन तीन आदतों में जो पहली आदत है वह है - अपनी दुनिया भर से तुलना करना. विचार करिए कितना ही समय हम यह सोच सोचकर गंवाते हैं कि बगल वालों के पास गाड़ी है, मेरे पास गाड़ी नहीं है. वो कहां से कहां पहुंच गया मैं वही रह गया या कुछ भी. हम तुलना करने लगते हैं जबकि हम सब अलग हैं सबकी अपनी दौड़ है. अपनी यात्रा है. यह सब सोचने के बजाय उस समय कुछ कर लिया जाए तो कितना कुछ हम हासिल कर लें. इसलिए किसी से तुलना नहीं करें.. दूसरी आदत है - दिन भर अतीत में रहना. छोटे भाई, एक बात गंठान बांध लीजिए कि याद करेंगे तो बीता हुआ सुख भी तुम्हें दु:ख ही देगा. इसलिए अतीत की गलतियां, भूलें दुख सब याद करने में समय बेकार मत करिए.. तीसरी आदत है- भविष्य की कल्पनाएं. यह भी हमारा अच्छा खासा समय ले जाती है. भविष्य की कल्पना करना योजना बनाना कभी बुरा नहीं है लेकिन उसी में मगन हो जाना यह उचित नहीं है. चाहे वह अच्छी कल्पना हो या कुछ बुरा होने का डर. दोनों ही आती मात्रा में कहीं का नहीं छोड़ती और हम कुछ बढ़िया नहीं कर पाते. इसलिए यहां से भी अपने नया साल का समय बचाइए.. तो यह तीन आदतें ध्यान रखकर अपने वर्तमान पर अपना समय लगाइए. अतीत से सीखिए और भविष्य की योजना बनाकर वर्तमान में जुट जाइए.. आपके पास आज का ही समय है. इसमें ही सबका संतुलन बनाकर कुछ बड़ा और बेहतर किया जा सकता है. तो चलिए, नए वर्ष के लिए अग्रिम शुभकामनाएं. अब नए वर्ष में मिलते हैं. आपके लिए कुछ नया लेकर. धन्यवाद.

कविता अंतर्मन की सघन अनुभूति की अभिव्यक्ति

मीनाक्षी दुबे

कविता में शब्दों का इस्तेमाल कृपणता से किया जाना चाहिए. कविता में बुद्धि के बजाय भाव- तत्व प्रधान होते है. जितने हम अपने अंतस में उतरते हैं उतनी ही कविता गहरी होती जाती है. कविता उपदेश देती प्रतीत नहीं होनी चाहिए. ये बातें देवास के ईटी सभागार में आयोजित लिट्रेचर क्लब की कविता केंद्रित गोष्ठी में हुई.

यह गोष्ठी मुख्यत: संवादपरक शैली में हुई. यह संवाद कविता की रचना प्रक्रिया पर आधारित था. इस नवाचार के पहले चरण में उपस्थित सभी ने 'आपकी नज़र में कविता क्या है' पर अपनी- अपनी बात रखी. यह बेहद रोचक रहा. बात सब कविता की ही कर रहे थे लेकिन जितने व्यक्ति, उतने नज़रिये सामने आए. दूसरे चरण में मनीष वैद्य एवं मनीष शर्मा ने हमारे इन विचारों को विस्तार दिया और कविता के रचाव पर विस्तृत चर्चा हुई. यदि हम कविता की बात करते हैं तो सबसे पहले हमें भक्ति काल याद आता है, दोहे, चौपाई, छंद, सोरठा याद आते हैं यानी लयबद्धता हमें लुभाती हैं. लेकिन नई कविता में शाब्दिक लय के बजाय आंतरिक लय अधिक महत्वपूर्ण मानी गई है. शब्दों के दोहराव एवं लय के कारण मंचीय कविताएँ ज़बान पर चढ़ जाती हैं वहीं नई कविता में शब्दों के दोहराव से बचा जाता है. कविता में रचनाकार, प्रतीक एवं बिंबो के माध्यम से अपने मनोभावों को सहेजता है. जब ये मनोभाव कविता रूप में अपनी बात कहें और हर पाठक को लगे कि अरे, यह बात तो मेरी या मेरे आसपास की है तब वह कविता बड़े फ़लक की हो जाती है. व्यष्टि से समष्टि तक का यह सफ़र कविता को अविस्मरणीय बना देता है.

कविता रचनाकार को व्यग्र करती है, आवेशित भी करती है. शब्द उसकी पकड़ में आने लगते हैं और वही शब्द कविता के रूप में कागज़ पर उतरते हैं. कविता में संवेदना का भाव प्रबल होता है.

कविता जितनी सहज होती है वह उतनी ही प्रभावी होती है. अपने जीवन अनुभव के साथ-साथ अपने आसपास का परिवेश एवं परिदृश्य भी कविता को प्रभावित करता है.

एक बार रचने के बाद रचना को बार- बार पढ़ कर देखना चाहिए. इसे कुछ दिन रखने के बाद दोबारा पढ़ने पर हम खुद अपनी रचना की कमियां नज़र आने लगती हैं और रचना को परिष्कृत करना आसान हो जाता है. इस तरह के रोचक संवादों से कविता की रचना प्रक्रिया को बहुत ही आसानी से समझा जा सका. तीनों शब्द शक्तियों अभिधा, व्यंजना और लक्षण पर भी अच्छी चर्चा हुई. इस गोष्ठी में मनीष वैद्य, मनीष शर्मा, सुधीर महाजन, शकुंतला दुबे, छाया कानूनगो, रश्मि शर्मा, कृपाली राणा, कुसुम वागडे, नीलम दुबे, सुमन कुमावत, हिमांशु कुमावत, उर्वशी उपाध्याय,बिंदु तिवारी, मीनाक्षी दुबे आदि उपस्थित थे.

लघुकथा

सोनू सेंटा क्लॉज बनेगा

सुरेश सौरभ

पति ने दुरदुराते हुए एकदम टीवी बंद कर दी- 'स्अला.'

'क्या हुआ?' अपने काम में लगी पत्नी बोली.

अरे! टीवी तो बिकाऊ मीडिया हो चुका है.'

'क्या करेंगे आप. मेरा तो टीवी देखने का बिलकुल मन ही नहीं होता.'

'सही कहा मैं तो कभी-कभी यूँ खोल लेता हूँ.'

'अरे! हाँ, बाजार जाना है, परसों सोनू के स्कूल में सेंटा क्लॉज़ वाला कोई कंपीटीशन रखा गया है. कई दिन से जिद किए है कि सेंटा वाली ड्रेस चाहिए. 'चलो तैयार होता हूँ.'

'पर.'

'पर-वर क्या?'

'अरे! वह लोग, कल पूरे बाजार में नारे लगाते हुए हंगामा कर रहे थे, कह रहे थे,यह तमाशा हमारे धर्म के बिलकुल विपरीत है. कहीं सेंटा क्लॉज की ड्रेस लेने हम गए और वहाँ उन उन्मादी-फसादी लोगों ने हंगामा कर दिया तो?'

तभी सोनू स्कूल से आ गया, फौरन वही रट लगा दी, 'बाजार चलो मम्मी ड्रेस लेनी है सेंटा वाली.'

छ: साल के सोनू को गोदी में उठाकर लाड़ जताते हुए पापा बोले 'आज जरूर चलेंगे बेटे.

अब भय मिश्रित हर्ष से पत्नी, पति को एकटक देखने लगी. उसके माथे पर बल आ गया. चेहरे पर विषाद की रेखाएं उभरने लगीं.

'अरे! तुम काहे फालतू में चिंता करती हो? मैं इन नफरती चिंटुओं से कतई नहीं डरता?'

हो हो हो हा हा हा..ऽ ऽ..सोनू को पिता खुशी से उछालने लगे. बाप बेटे की मस्ती का मंजर, वातावरण को खुशनुमा करने लगा. पत्नी की आंखों में, बच्चों को हजार-हजार खुशियाँ बांटता, सेंटा क्लॉज़ वाली छवि उभरने लगी.

कविता

कैनवास

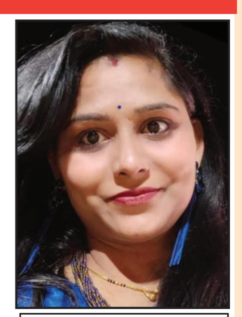

शिल्पी जैन

खुशियाँ भी होती हैं
छोटी-बड़ी
सोचती हूँ जब
तो स्कूल में बच्चों
के साथ बीते
पल घूमने लगते है
आँखो के आगे

एक बच्चा
मन के कैनवास पर
उकेरता है फुटबॉल

अपने पसंदीदा रंगों से
सजाता है उसे
मन-मुताबिक
और फिर सपनों में खो जाता है
उससे खेलते हुए

चारों ओर तालियों का शोर
दोस्त उसका नाम
पुकारते हैं बार- बार पूरे जोश से

बॉल की तरह
जाना चाहता है वो
आसमाँ के क़रीब तक
अपनी मुट्ठी में भर लेना चाहता है
आकाश का नीलापन
कि घर लौटकर
माँ के हाथों में उसे रखकर
बता सके अपनी उड़ान

लेकिन
लंच की घंटी बजते ही
उसे वहीं छोड़
वह दौड़ जाता है
प्लेट हाथों में थामे
अपनी बारी के इंतज़ार में

रोटी की महक
खींचती है उसे
भूख मिट जाने की खुशी
सबसे बड़ी है
उसके लिए

यात्रा वृत्तांत

मौज-मस्ती में डूबा बाली का ब्रावा बीच

गोविन्द सेन

साल दो हजार तेईस के नवंबर की पच्चीस तारीख थी. मेरी नींद सुबह जल्दी खुल जाती है. सुबह घूमने की आदत है. विला मोरियाना में हम ठहरे हुए थे. इस विला में यह हमारी दूसरी रात थी. यहाँ रसोईघर था जिसमें मनचाहा भोजन पकाया जा सकता है. रसोई के तमाम बर्तन मौजूद थे. कैंग्गु बाली के दक्षिण-पश्चिम में स्थित समुद्र तटीय गाँव है. यह विला इसी गाँव में स्थित था. इसका समुद्र तट दस किलोमीटर लम्बा है.

मैं चाय बनाकर पी चुका था. मेरे पास अब खाली समय था. मुझे बता दिया गया था कि समुद्र तट वहाँ से करीब एक-डेढ़ किलोमीटर ही है. सड़क भी सीधी थी. यह मेरे लिए अच्छा अवसर था. मैं अकेला पैदल ही ब्रावा बीच के लिए निकल पड़ा. सुबह नए इलाके में पैदल चलने का अपना अलग आनन्द होता है. नई-नई चीजें आपका ध्यान खींचती हैं. आप उन्हें देख हैरत से भरते जाते हैं. ताज़ा हवा आपको ताज़गी का एहसास कराती है. रास्ते में पड़ने वाली हर चीज को देखते हुए चलते जाने का अनोखा सुख होता है. सभी दुकानें अभी खुली नहीं थीं. लेकिन वाहनों का थोड़ा आवागमन शुरू हो गया था. मेरी दाहिनी ओर होटल, क्लब, रेस्टारेंट अधिक थे. दाहिनी ओर ही ब्रावा बीच था. बोर्डों पर उनके ज्यादातर नाम और अन्य जानकारियाँ सैलानियों की सुविधा के लिए रोमन लिपि में थे. वैसे यहाँ बालिनीज़ भाषा चलती है. मैंने यहाँ कई जगहों पर रोमन के साथ बालिनीज़ लिपि में भी लिखा हुआ देखा है. यह लिपि मुझे अनोखी लगी. कुछ-कुछ उर्दू तो कुछ-कुछ कन्नड़ जैसी. मानो दोनों लिपियों के अक्षरों का मिला दिया गया हो. कुछ वर्ण फोर्क (काँटेदार चम्मच) में फँसे सिवइयों जैसे लटके हुए. सर्पों जैसी कुंडलाकार अक्षरों में कई आकृतियाँ नज़र आती हैं.

शिरोरेखाविहीन घुमावदार अक्षर बहुत सुन्दर लग रहे थे. कोई अक्षर कुंडली मार कर फन काढ़े हुए साँप जैसा था तो कोई लहराती रस्सी जैसा. अंग्रेजी भाषा रोमन में लिखी जाती है. अधिकांश काले-गोरे सैलानी थोड़ी-बहुत अंग्रेजी तो जानते ही हैं. इसलिए काम चल जाता है. केवल बालिनीज़ में ही लिखा होता तो पढ़ना-समझना पर्यटकों के लिए मुश्किल होता. रास्ता सीधा जाकर दाहिनी ओर मुड़ गया था. यहाँ सड़क चौड़ी थी. पार्क किए हुए स्कूटरों की लम्बी कतारें लगी हुई थीं. ढलान की ओर गटर का पानी जा रहा था जो आगे मुहाने पर एक डबरे में समाता जा रहा था. आखिर में यह पानी समुद्र में जाकर मिल रहा था.

नीचे उतरते ही सामने ब्रावा बीच का नज़ारा था. विशाल नीला समुद्र लहरा रहा था. दूर तक रेतीला तट फैला हुआ था. फेनिल लहरें तट को छूकर लौट रही थीं. यह सिलसिला अनवरत चल रहा था. अद्भुत दृश्य था. पाँव रेत में धँसते जा रहे थे. यहाँ की रेत का रंग काला था. यह मेरे लिए अचरज था. बाली के ही अन्य तटों पर अब तक सफ़ेद रेत मिली थी. दरअसल ज्वालामुखीय प्रभाव से यह काली हो गई थी.

मेरे जूतों में रेत घुसने लगी थी. मुझे जूते उतारकर हाथ में लेने पड़े. रेत से मेरे पाँव लथपथ हो गए थे. बारीक रेत पाँव के पंजे पर चिपक गई थी. आते वक्त एक स्थानीय कर्मचारी पाइप से सड़क को धो रहा था. मैंने पाँवों की ओर इशारा करते हुए पानी डालने का आग्रह किया.

उसने सहज ही मेरे पाँवों पर पानी डालकर उन्हें धुलवा दिया. अन्यथा मुझे जूते हाथों में लेकर ही जाना पड़ता. यदि जूते पहन लेता तो रेत चुभती रहती. सुबह 9:19 को निकला था. करीब डेढ़ घंटे में वापस विला लौट आया था. लंच के लिए हम 'लोला'स केंटीना मैक्सिकाना' नामक भोजनालय पैदल बाज़ार में घूमते हुए पहुँचे. यहाँ मैक्सिकन फ़ूड था. इस भोजनालय का संचालन महिलाओं द्वारा ही किया जा रहा था. जिस महिला ने भोजन का ऑर्डर लिया वह गामा पहलवान-सी बलिष्ठ लग रही थीं. अवि टमी पेन (पेट दर्द) की शिकायत कर रहा था. उसके लिए चावल और दही विला से ही लेकर चले थे. उसे बहला-फुसला कर वही खिलाया गया. भोजनालय के भीतर ही टेबल टेनिस का जालीदार दीवारों से घिरा कोर्ट था. इसमें लाल त्वचा वाले दो पुरुष खेल रहे थे. ठक-ठक की आवाजें आ रही थी. एक साँवली महिला कुर्सी पर बैठी हुई थी. वह किसी बात पर खुलकर खूब खिलखिला रही थी. पुरुष मुस्कुरा रहे थे. शायद खेल-खेल में कोई मजेदार बात हो गई थी.

अवि की तबीयत को देखते हुए वापसी में हम काले रंग की टैक्सी से विला आए. शाम को ब्रावा बीच पर सूर्यास्त देखना था. हम पाँचों बीच के लिए रवाना हो गए. अवि की हालत में भी कुछ सुधार था. दूर तक सैलानी फैले हुए थे. मोबाइल से फोटो खींच रहे थे. घूम रहे थे. लहरों के साथ खेल रहे थे. सभी मौज-मस्ती के मूड में थे. अवि के लिए सैंड-टॉयज रखने पड़ते हैं. वह अपने साथ खिलौनों का एक बैग रखता ही है. वह रेत में खेलने लगा था. स्टार, मछली, फूल आदि के साँचे से खेल चुका था. अब वह फावड़े से रेत को उलट-पलट रहा था. उसे मनचाहा आकार दे रहा था. रेत से कुछ नया बनाना चाह रहा था. उसने अपना एक पाँव रेत के भीतर धँसा दिया था. खेल की तल्लीनता में वह टमी पेन भूल गया था. एक बच्ची समुद्र की लहरों के साथ प्लास्टिक की बोतलें इकट्ठा करने के लिए दौड़ रही थी. इस दृश्य को देखकर दु:ख हुआ. उसके पढ़ने और खेलने के दिन थे. लेकिन उसे पेट भरने के लिए काम करना पड़ रहा था. मासूम बच्चे सबसे अधिक गरीबी के शिकार होते हैं. मुझे राजेश जोशी की कविता याद हो आई-'बच्चे काम पर जा रहे हैं/ हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह.' आगे वे लिखते हैं कि इस पंक्ति को विवरण की तरह नहीं, सवाल की तरह लिखा जाना चाहिए.

समुद्र के ऊँचे किनारे पर स्थित कई रेस्टोरेंट, क्लब, होटल आदि थे जहाँ काफी हलचल हो रही थी. वे लाल-पीली-हरी-सफेद कई तरह की रौशनी से जगमग थे. वहाँ से डीजे का तेज़ धमाकेदार संगीत उठ रहा था जो समुद्र की लहरों के शोर को भी मात देने की कोशिश कर रहा था. उस रौशनी में सैलानी नाच-नाच कर पागल हुए जा रहे थे. शोर, संगीत और रौशनी एक-दूसरे के साथ गुत्थम-गुत्था हो रहे थे. सूर्यास्त हो चुका था. अहिस्ता-आहिस्ता अँधेरा गाढ़ा होता जा रहा था. मन के तल पर थोड़ी उदासी पसर गई थी. मुझे बोतलें चुनती उस बच्ची का वह दृश्य परेशान कर रहा था.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी